+ नवभारत
भोपाल, रविवार, 8 मार्च 2026

भारतीय ज्योतिष के विशेष संदर्भ में विश्वदृष्टि

ज्योतिषाचार्य
तेजस्कर पाण्डेय

अंतत : यह कहा जा सकता है कि ज्योतिष के क्षेत्र में सहकर्मी समूहों की शक्ति अत्यंत महत्वपूर्ण है . वे ज्ञान के संरक्षण, विकास और प्रसार के साथ-साथ ज्योतिष की विश्वदृष्टि को भी आकार देते हैं . भारतीय ज्योतिष के संदर्भ में यह शक्ति और भी अधिक स्पष्ट रूप से दिखाई देती है क्योंकि यहाँ ज्योतिष केवल एक विद्या नहीं बल्कि एक सांस्कृतिक और आध्यात्मिक परम्परा का अंग है . सहकर्मी समूहों के माध्यम से यह परम्परा पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ती रहती है और समय के साथ नए अनुभवों और विचारों को आत्मसात करती रहती है . इस प्रकार ज्योतिष में सहकर्मी समूहों की भूमिका केवल ज्ञान के आदान-प्रदान तक सीमित नहीं है, बल्कि वे उस व्यापक सामाजिक और सांस्कृतिक ताने-बाने का हिस्सा हैं जिसके भीतर ज्योतिष की विश्वदृष्टि विकसित होती है और मानव जीवन के अर्थ को समझने का एक विशिष्ट दृष्टिकोण प्रदान करती है .

मानव समाज का ज्ञान-सृजन केवल व्यक्तिगत बौद्धिक प्रयास का परिणाम नहीं होता, बल्कि यह सामूहिक अनुभव, संवाद और सामाजिक अंत:क्रिया की दीर्घ प्रक्रिया से विकसित होता है. किसी भी ज्ञान परम्परा के निर्माण और संरक्षण में सहकर्मी समूह की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है. ज्योतिष के क्षेत्र में यह भूमिका और भी अधिक गहन है, क्योंकि ज्योतिष केवल गणना या ग्रह-नक्षत्रों के गणितीय अध्ययन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक जीवंत परम्परा है जो गुरु-शिष्य संवाद, विद्वत् संगोष्ठियों, शास्त्रार्थों, संस्थागत शिक्षा और सामाजिक विश्वासों के माध्यम से निरंतर विकसित होती रहती है. विशेष रूप से भारतीय ज्योतिष के संदर्भ में सहकर्मी समूहों की शक्ति को समझना आवश्यक है, क्योंकि भारतीय ज्योतिष का विकास हजारों वर्षों की बौद्धिक परम्परा, वैदिक साहित्य, खगोलशास्त्रीय अवलोकन और सामाजिक अनुभवों के सम्मिलित प्रभाव से हुआ है. इस प्रकार ज्योतिष में सहकर्मी समूह केवल ज्ञान के प्रसार का माध्यम नहीं हैं, बल्कि वे उस विश्वदृष्टि के निर्माण में भी योगदान करते हैं जिसके माध्यम से ज्योतिषी ब्रह्माण्ड और मानव जीवन के संबंध को समझते हैं.

भारतीय ज्योतिष की परम्परा मूलत: वैदिक ज्ञान प्रणाली से जुड़ी हुई है. वेदांग ज्योतिष से लेकर बृहत् पराशर होरा शास्त्र, बृहत् जातक, सारावली और फलदीपिका जैसे ग्रंथों तक यह ज्ञान निरंतर विकसित हुआ है. इन ग्रंथों के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि ज्योतिष का विकास व्यक्तिगत अनुभव से अधिक सामूहिक विद्वत्ता का परिणाम रहा है. प्राचीन काल में गुरुकुलों और विद्वत् सभाओं में ज्योतिषियों के समूह मिलकर ग्रहों की गतियों, नक्षत्रों के प्रभावों और मानवीय जीवन की घटनाओं के साथ उनके संबंधों पर विचार करते थे. इन समूहों में होने वाली चर्चाएँ, वाद-विवाद और शास्त्रार्थ ही वह माध्यम थे जिनके द्वारा ज्योतिष के सिद्धांतों का परीक्षण और परिष्कार होता था. इस प्रकार सहकर्मी समूहों ने ज्योतिष को केवल एक परम्परा के रूप में संरक्षित नहीं किया, बल्कि उसे वैज्ञानिक और दार्शनिक विमर्श का विषय भी बनाया.

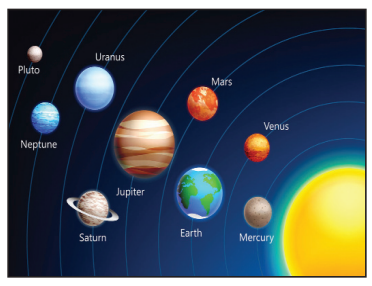

समाजशास्त्रीय दृष्टि से देखा जाए तो सहकर्मी समूह सामाजिकरण की एक महत्वपूर्ण इकाई होते हैं. किसी भी व्यक्ति के विश्वास, दृष्टिकोण और व्यवहार पर उसके सहकर्मी समूह का गहरा प्रभाव पड़ता है. ज्योतिष के क्षेत्र में भी यह प्रक्रिया स्पष्ट रूप से दिखाई देती है. जब कोई व्यक्ति ज्योतिष का अध्ययन प्रारम्भ करता है, तो वह केवल पुस्तकों से ही नहीं सीखता बल्कि अपने शिक्षकों, सहपाठियों और अन्य ज्योतिषियों के साथ निरंतर संवाद के माध्यम से अपनी समझ को विकसित करता है. यह संवाद ही वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से ज्योतिषीय ज्ञान का व्यावहारिक स्वरूप सामने आता है. उदाहरण के लिए, किसी कुंडली के विश्लेषण में अलग-अलग ज्योतिषी अपने अनुभवों के आधार पर भिन्न-भिन्न दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं. इन दृष्टिकोणों के आदान-प्रदान से न केवल ज्ञान का विस्तार होता है बल्कि एक सामूहिक समझ भी विकसित होती है.

भारतीय समाज में ज्योतिष का स्थान केवल एक ज्ञान प्रणाली के रूप में नहीं बल्कि एक सांस्कृतिक संस्था के रूप में भी है. विवाह, गृहप्रवेश, नामकरण, यात्रा, व्यवसाय और धार्मिक अनुष्ठानों में ज्योतिष की भूमिका महत्वपूर्ण होती है. इन सभी क्षेत्रों में ज्योतिषियों के सहकर्मी समूह सामाजिक विश्वासों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं. उदाहरण के लिए, जब किसी विशेष ग्रहयोग या दशा के बारे में ज्योतिषियों के बीच एक सामूहिक सहमति बनती है, तो वह धीरे-धीरे समाज में एक स्थापित विश्वास के रूप में स्वीकार कर ली जाती है. इस प्रकार सहकर्मी समूह केवल ज्योतिषियों के बीच संवाद का माध्यम नहीं हैं, बल्कि वे समाज में ज्योतिष के प्रति विश्वास और आस्था को भी प्रभावित करते हैं.

आधुनिक काल में ज्योतिष के क्षेत्र में सहकर्मी समूहों की भूमिका और भी व्यापक हो गई है. आज ज्योतिष केवल पारम्परिक गुरुकुलों तक सीमित नहीं है, बल्कि विश्वविद्यालयों, शोध संस्थानों और अंतरराष्ट्रीय संगठनों में भी इसका अध्ययन और शोध किया जा रहा है. भारत में बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय और लखनऊ विश्वविद्यालय जैसे संस्थानों ने ज्योतिष के अकादमिक अध्ययन को संस्थागत स्वरूप प्रदान किया है. इन संस्थानों में ज्योतिष के विद्यार्थियों और विद्वानों के बीच होने वाले संवाद, संगोष्ठियाँ और शोध चर्चाएँ सहकर्मी समूहों की शक्ति का उदाहरण प्रस्तुत करती हैं. ऐसे समूहों में विभिन्न दृष्टिकोणों का आदान-प्रदान होता है जिससे ज्योतिष की व्याख्या अधिक समृद्ध और बहुआयामी बनती है.

वैश्विक स्तर पर भी ज्योतिष के अध्ययन में सहकर्मी समूहों का महत्व स्पष्ट रूप से दिखाई देता है. पश्चिमी देशों में भी ज्योतिषियों के संगठन, शोध समूह और अकादमिक मंच सक्रिय हैं. ये समूह न केवल ज्योतिष के सिद्धांतों पर चर्चा करते हैं बल्कि उसके मनोवैज्ञानिक, सामाजिक और सांस्कृतिक आयामों पर भी विचार करते हैं. उदाहरण के लिए, आधुनिक पश्चिमी ज्योतिष में मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास इसी प्रकार के सहकर्मी समूहों की चर्चा और शोध का परिणाम है. जब विभिन्न देशों के ज्योतिषी एक दूसरे के अनुभवों और शोध निष्कर्षों को साझा करते हैं, तो एक वैश्विक ज्योतिषीय समुदाय का निर्माण होता है जो ज्ञान के आदान-प्रदान को प्रोत्साहित करता है.

राशिफल

दिनांक- 08 से 14 मार्च 2026 तक

ज्योतिषाचार्य पंडित
प्रियंका नारायणशंकर व्यास,
कोतवाली बाजार,
जबलपुर मो.नं.
098266-21998

साप्ताहिक ग्रहस्थिति- इस सप्ताह सूर्य कुम्भ राशि में ता . 14 को 3/38 रात से मीन राशि में, मंगल कुम्भ राशि में, वक्री बुध कुम्भ राशि में, वक्री गुरू मिथुन राशि में ता . 11 को 4/36 दिन से मार्गी, शुक्र मीन राशि में, शनि मीन राशि में, राहु कुम्भ राशि में, केतु सिंह राशि में और चन्द्रमा तुला, वृश्चिक धनु और मकर राशि में संचरण करेगा.

ग्रहयोगों का प्रभाव :- ता . 9 को वक्री बुध शतभिषा नक्षत्र में आकर अनाजों में कुछ तेजी करेगा, सोना चांदी में कुछ मंदी आयेगी . ता . 11 को गुरू मार्गी होने से और गुरू की मंगल बुध राहु पर नवम दृष्टि होने से नई योजनायें क्रियान्वित होगीं . सूर्य शुक्र एवं शनि का मीन राशि में होना देश में रोग एवं राजनैतिक संकट का कारण बन सकती है . गुरू मिथुन राशि में मार्गी होने से चावल गुड खांड, घी, सरसों, तम्बाखू तेज होगें . ता . 14 को सूर्य मीन राशि में शुक्र और शनि के साथ होने से अलसी, सरसों, घी, तेल, तिल, गुड, शक्कर, सोना, चांदी, रूई और अनाज तेज रहेगें . यथा..... .. मीन राशिंगते भानौ, सर्वधान्य महर्घता . लवणं तिल-तैलं च महर्घ यान्ति वै ध्रुवम्..

पर्व-व्रत-त्यौहार :

रविवार	08 मार्च को	रंग पंचमीं,
सोमवार	09 मार्च को	एकनाथ छठ
बुधवार	11 मार्च को	शीतलाष्टमीं (बसोरा),
शनिवार	14 मार्च को	पापमोचनी एकादशी व्रत,

मेष

सप्ताह आपका काफी उतार चढ़ाव वाला रहेगा, कार्य की व्यस्तता रहेगी, अधिकारियों से तालमेल बनाकर आगे बढ़े. सामाजिक क्षेत्र में सक्रिता बढ़ेगी, व्यापार में कुछ नये साझेदारों को शामिल कर सकते हैं, किसी करीबी मित्र या रिश्तेदार का सहयोग मिलेगा, सप्ताह के अन्त में अति विश्वास आपको संकट में डाल सकता है.

वृषभ

सामाजिक कार्यों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेंगे, जिस कार्य में हाथ डालेंगे, सफलता मिलेगी, वित्तीय स्थिति पहले से बेहतर होगी, परन्त आप अवसरों को गंवा सकते हैं, कैरियर और सामाजिक स्थिति में सुधार होगा, नये वाहन की योजना बन सकती है, सप्ताहान्त में सोच समझकर और कार्यक्षमता के अनुरूप कार्य होगा, घरेलू वातावरण खुशनुमा रहेगा, मनोरंजक यात्रा होगी.

मिथुन

अपनों के व्यवहार से खिन्नता होगी, घरेलू मामलों में विपरीत स्थिति का सामना करना पड़ेगा, सप्ताह के प्रारंभ में महत्व के कार्य करने की बजाय, रोजमर्रा की दिनचर्या ही निभाने का प्रयास करें, व्यवसाय में आप अपरिचित पर अत्याधिक विश्वास न करें, स्वास्थ्य नरम गरम रहेगा, आप बच्चों के लिये कुछ हद तक परेशान रह सकते हैं.

कर्क

कार्यस्थल पर आपकी योग्यता और कार्य के उचित मान सम्मान मिलेगा, अपनी बात मनवाने के लिये संघर्ष करना पड़ेगा, यह सप्ताह कैरियर की दृष्टि से मनोवांछित साबित होगा. आर्थिक स्थिति पहले से बेहतर होगी, मानसिक असंतुलन किसी प्रकार का कष्ट अथवा घरेलू परेशानी से बचें. दाम्पत्य जीवन में सुख समृद्धि का भाव कायम रहेगा. कारोबार में ईमानदारी से ध्यान दें.

सिंह

व्यापारिक और कैरियर की दृष्टि से समय महत्वपूर्ण रहेगा, विद्यार्थी पढ़ाई के साथ प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी में व्यस्त रहेंगे, बच्चों की भावनाओं का ध्यान रखें, सप्ताह के मध्य महत्वपूर्ण निर्णय लेना पड़ेगा, व्यवसाय के क्षेत्र में विरोधियों से सतर्क रहें, किसी करीबी मित्र के साथ दूर दराज की यात्रा पर जा सकते हैं, पुराना पैसा मिलने का योग है.

कन्या

प्रगति की दिशा में आगे बढ़ेंगे, अपनी योग्यता और सामर्थ्य का उपयोग सफलता पाने के लिये करेंगे, आपके व्यवहार और सोच में व्यापक बदलाव आ सकता है, जमकर जायजाद की खरीद बिक्री और ऋण के लेनदेन से लाभ होगा, राजनेता अपने हित की रक्षा के लिये प्रयास करेंगे, जीवनसाथी का स्वास्थ्य बिगड़ सकता है, गुमी वस्तु मिलने का योग है.

तुला

कार्यक्षेत्र में कैरियर में बड़ी सफलता मिलेगी, जिससे हर क्षेत्र में आप अपने को खास और विशिष्ट स्थिति में पायेंगे, व्यवसायिक साझेदारों से सावधानी रखें, महत्वपूर्ण निर्णय होंगे, जीवनसाथी का सहयोग कार्यक्षेत्र में नई संभावना देता है, नई सोच व कार्यशैली लाभकारी सिद्ध होगी, मांगलिक कार्यो पर विचार होगा.

वृश्चिक

आप अच्छी तरह सोच विचार कर ही अपनी प्राथमिकतायें तय करेंगे, परस्पर विचारों का आदान प्रदान करने से अच्छी बात बन सकती है, अतिरिक्त जिम्मेदारियों का बोझ उठाना पड़ेगा, विशिष्टजनो से आपकी प्रशंसा होगी, भूमि और घर खरीद बिक्री फायदेमंद रहेगी, व्यापार एवं राजकीय कारणों से की गई यात्रा में बेहतर परिणाम मिलेंगे.

धनु

साझेदारियों के साथ व्यक्तिगत संबंध भी मजबूत होंगे, काननी मामले में प्रापर्टी संबंधी विवाद आसानी से सलझ सकते हैं, जान पहचान का दायरा बढ़ेगा, नौकरी पेशा लोगों की पदोन्नति संभव है, कार्यक्षेत्र में आप संतुष्ट रहेंगे, अपने स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें, घर परिवार में मांगलिक कार्य की योजना बनेगी, बुजुर्गो के स्वास्थ्य पर ध्यान दें.

मकर

सोच समझकर ही आप आगे बढ़ना चाहेंगे, आप पूरे होश एवं जोश के साथ कार्य में जुट जायेंगे, भविष्य में लाभ की योजनाओं की शुरूआत हो सकती है अनुसंधान एवं कला के क्षेत्र में सफलता मिलेगी. उच्च पदस्थ लोगों के साथ सामूहिक कार्य में भाग लेंगे, जीवनसाथी और बच्चों की आपसे अपेक्षायें बढ़ सकती है.

कुम्भ

अपने मन में चल रहे अर्न्तद्वंद को दूर कर कार्य में जुट जाने का समय है, वरिष्ठों का सहयोग बना रहेगा, आप अपने स्वास्थ्य और सामाजिक स्थिति पर अत्याधिक खर्च करेंगे, व्यवसाय में किसी करीबी मित्र को साझेदार बना सकते हैं, सप्ताह के अंतिम समय स्वास्थ्य में गिरावट संभावना है, श्रम उतना ही करें, जितना आपका शरीर साथ दे.

मीन

व्यापार यात्रा और धार्मिक कार्यो में आपकी रूचि बढ़ेगी, सफलता की ओर कदम बढ़ेगे, कार्य पूर्ण करने में सहयोगी का रवैया आपके प्रति सहयोगात्मक रहेगा, जान पहचान का दायरा बढ़ेगा, आप किसी बड़ी योजना में शामिल हो सकते हैं, परन्तु यह आपकी कार्यक्षमता के अनुकूल नहीं होगा, आपको कड़ी मेहनत और योजनाबद्ध तरीके से सफलता मिलेगी.

पापमोचनी एकादशी : जानें पूजा, कथा और महत्व

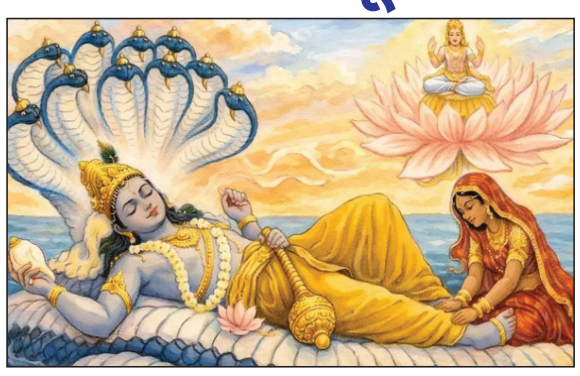

चैत्र मास की कृष्ण पक्ष एकादशी 15 मार्च 2026 को मनाई जाएगी. इस दिन भगवान विष्णु की पूजा और व्रत करने से पापों से मुक्ति मिलने की मान्यता है.

हिंदू धर्म में एकादशी व्रत को विशेष धार्मिक महत्व दिया जाता है. इन्हीं में से एक पापमोचनी एकादशी है, जो चैत्र मास के कृष्ण पक्ष में आती है. मान्यता है कि इस दिन भगवान विष्णु की पूजा और व्रत करने से व्यक्ति को अपने पापों से मुक्ति मिलती है और जीवन में सुख-समृद्धि का मार्ग खुलता है. धार्मिक ग्रंथों के अनुसार पापमोचनी एकादशी को पापों का नाश करने वाली एकादशी कहा गया है. कहा जाता है कि इस व्रत को श्रद्धा और नियमों के साथ करने से व्यक्ति इस जन्म ही नहीं बल्कि पूर्व जन्मों के पापों से भी मुक्त हो सकता है. इस दिन भक्त सुबह स्नान कर भगवान विष्णु की पूजा करते हैं और पूरे दिन व्रत रखते हैं. साथ ही दान, जप और भजन-कीर्तन का विशेष महत्व बताया गया है. व्रत के अगले दिन द्वादशी तिथि पर विधि-विधान से पारण किया जाता है.

पापमोचनी एकादशी की कथा- पौराणिक कथा के अनुसार प्राचीन काल में च्यवन ऋषि के पुत्र मेधावी ऋषि कठोर तपस्या कर रहे थे. उसी समय स्वर्ग की अप्सरा मंजुघोषा उन्हें मोहित करने के लिए आई. उसके सौंदर्य और संगीत से ऋषि का तप भंग हो गया और वे लंबे समय तक मोह में पड़ गए. जब उन्हें अपनी गलती का एहसास हुआ, तब उन्होंने अपने पापों से मुक्ति पाने के लिए पापमोचनी एकादशी का व्रत किया.

पूजा विधि और उपाय

पापमोचनी एकादशी के दिन सुबह स्नान कर भगवान विष्णु की विधि-विधान से पूजा करनी चाहिए . इस दिन तिल, गुड़, जल, अन्न और वस्त्र का दान करना शुभ माना जाता है . तुलसी के पौधे में जल अर्पित कर दीपक जलाने से जीवन की नकारात्मकता दूर होती है . इसके अलावा विष्णु सहस्रनाम का पाठ करने से मन और आत्मा शुद्ध होती है . धार्मिक मान्यता के अनुसार शाम के समय पीपल के पेड़ के नीचे सरसों के तेल का दीपक जलाने से पितृ दोष दूर होता है और घर में सुख-समृद्धि आती है .

घर में आंवले का पेड़ कहां लगाना चाहिए?

जानिए वास्तु नियम और शुभ दिशा का महत्व

हिंदू धर्म और वास्तु शास्त्र में पेड़-पौधों का विशेष महत्व बताया गया है. मान्यता है कि सही दिशा में लगाए गए पौधे न केवल वातावरण को शुद्ध करते हैं, बल्कि घर में सुख-समृद्धि और सकारात्मक ऊर्जा भी बढ़ाते हैं. इन्हीं पवित्र पौधों में से एक है आंवला का पेड़, जिसे धार्मिक दृष्टि से अत्यंत शुभ माना गया है. वास्तु शास्त्र के अनुसार यदि आंवले का पौधा उचित दिशा में लगाया जाए, तो यह घर में धन, स्वास्थ्य और मानसिक शांति का कारण बन सकता है.

कौन सी दिशा है सबसे शुभ?- वास्तु नियमों के अनुसार आंवले का पेड़ घर की उत्तर दिशा में लगाना सबसे उत्तम माना जाता है. उत्तर दिशा को कुबेर की दिशा कहा जाता है, जो धन और समृद्धि से जुड़ी होती है. इसके अलावा इसे पूर्व या उत्तर-पूर्व (ईशान कोण) में भी लगाया जा सकता है. इन दिशाओं में लगाया गया आंवला शुभ फल देने वाला माना जाता है.

सुख-समृद्धि में वृद्धि- मान्यता है कि घर में आंवले का पेड़ होने से परिवार में सुख-शांति बनी रहती है. यह सकारात्मक ऊर्जा को आकर्षित करता है और जीवन में नए अवसरों के द्वार खोलता है. कई लोग इसे घर के आंगन या बगीचे में विशेष स्थान देकर लगाते हैं.

धन लाभ की मान्यता- वास्तु शास्त्र में कहा गया है कि आंवले का पेड़ घर में होने से माता लक्ष्मी की कृपा बनी रहती है. इसे आर्थिक उन्नति और धन वृद्धि का प्रतीक भी माना जाता है. हालांकि यह धार्मिक आस्था पर आधारित मान्यता है.

नकारात्मक ऊर्जा से रक्षा- आंवला का वृक्ष घर के वातावरण को शुद्ध करने और नकारात्मक ऊर्जा को दूर करने वाला माना गया है.

शीतला अष्टमी : संतान सुख और स्वास्थ्य की कामना का पर्व

11 मार्च को मनाई जाएगी शीतला अष्टमी . इस दिन माता शीतला को ठंडे भोजन का भोग लगाकर स्वास्थ्य, सुख और रोगों से रक्षा की कामना की जाती है . हिंदू धर्म में शीतला अष्टमी का पर्व विशेष आस्था और परंपराओं के साथ मनाया जाता है . इस दिन भक्त माता शीतला की पूजा करते हैं और उन्हें ठंडे भोजन का भोग अर्पित करते हैं . कई स्थानों पर इस पर्व को बसौड़ा या बसोड़ा के नाम से भी जाना जाता है . इस दिन की सबसे खास परंपरा यह है कि घरों में चूल्हा नहीं जलाया जाता .

श्रद्धालु एक दिन पहले यानी सप्तमी को ही भोजन तैयार कर लेते हैं और अगले दिन उसी ठंडे भोजन को प्रसाद के रूप में माता को अर्पित करते हैं और स्वयं ग्रहण करते हैं . परंपरागत रूप से मीठे चावल, हलवा, दही, पूड़ी या अन्य ठंडे पकवान भोग में चढ़ाए जाते हैं . मान्यता है कि माता शीतला स्वच्छता और स्वास्थ्य की देवी हैं . उनकी पूजा करने से गर्मी के मौसम में फैलने वाली संक्रामक बीमारियों जैसे चेचक और खसरा से रक्षा होती है . खासतौर पर बच्चों की लंबी उम्र और अच्छे स्वास्थ्य के लिए महिलाएं यह व्रत रखती हैं और श्रद्धा से पूजा करती हैं . इस दिन देश के कई हिस्सों में माता शीतला की पूजा बड़े श्रद्धा भाव से की जाती है . राजस्थान, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, गुजरात और हरियाणा में यह पर्व विशेष रूप से लोकप्रिय है . शीतला अष्टमी को कई स्थानों पर बसौड़ा भी कहा जाता है . ' बसौड़ा' का अर्थ है बासी या पहले से तैयार भोजन . इस दिन घरों में चूल्हा नहीं जलाया जाता .

सूर्य को मजबूत करने के लिए कौन सा रत्न पहनें?

जानिए माणिक्य धारण करने के नियम और सावधानियां

यदि कुंडली में सूर्य शुभ और मजबूत स्थिति में हो तो व्यक्ति को करियर में उन्नति, समाज में प्रतिष्ठा और प्रशासनिक क्षेत्र में सफलता मिलती है. वहीं यदि सूर्य कमजोर, नीच राशि में या अशुभ भाव में स्थित हो, तो व्यक्ति को आत्मविश्वास की कमी और करियर संबंधी चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है.

ज्योतिष शास्त्र में सूर्य को ग्रहों का राजा कहा गया है. यह आत्मविश्वास, नेतृत्व क्षमता, प्रतिष्ठा और सरकारी क्षेत्र में सफलता का कारक माना जाता है. यदि किसी जातक की कुंडली में सूर्य कमजोर स्थिति में हो, तो करियर में रुकावट, मान-सम्मान में कमी और आत्मबल में गिरावट देखी जा सकती है. ऐसे में ज्योतिष में सूर्य को मजबूत करने के कई उपाय बताए गए हैं, जिनमें प्रमुख है उचित रत्न धारण करना.

रत्न शास्त्र के अनुसार सूर्य ग्रह से संबंधित मुख्य रत्न माणिक्य है. इसे धारण करने से आत्मविश्वास, ऊर्जा और निर्णय क्षमता में वृद्धि होने की मान्यता है. हालांकि रत्न धारण करने से पहले कुंडली का विश्लेषण आवश्यक माना गया है. आइए जानते हैं सूर्य को बलवान बनाने के लिए कौन सा रत्न पहनना चाहिए और उसे धारण करने के क्या नियम हैं.

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार यदि कुंडली में सूर्य शुभ और मजबूत स्थिति में हो तो व्यक्ति को करियर में उन्नति, समाज में प्रतिष्ठा और प्रशासनिक क्षेत्र में सफलता मिलती है. वहीं यदि सूर्य कमजोर, नीच राशि में या अशुभ भाव में स्थित हो, तो व्यक्ति को आत्मविश्वास की कमी और करियर संबंधी चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है. ऐसी स्थिति में सूर्य ग्रह को मजबूत करने के लिए माणिक्य रत्न धारण करने की सलाह दी जाती है. माणिक्य लाल रंग का कीमती रत्न होता है और इसका सीधा संबंध सूर्य से माना गया है.

श्रीलंका सहित कुछ देशों में पाया जाने वाला माणिक्य हल्के पीले आभा वाला भी होता है.

कब पहनें माणिक्य?

- यदि कुंडली में लग्नेश सूर्य हो.
- सूर्य तृतीय भाव में स्थित हो.
- मेष, सिंह और धनु लग्न के जातकों के लिए यह रत्न सामान्यत: शुभ माना जाता है.
- कर्क, वृश्चिक और मीन लग्न वालों को यह मध्यम फल दे सकता है.

रत्न धारण करने से पहले योग्य ज्योतिषाचार्य से कुंडली का विश्लेषण कराना आवश्यक माना जाता है, क्योंकि गलत रत्न विपरीत प्रभाव भी दे सकता है.

कैसे धारण करें माणिक्य?

- इसे धारण करने का सर्वोत्तम दिन रविवार माना गया है .
- पुष्य, कृत्तिका, उत्तराषाढ़ा या उत्तराभाद्रपद नक्षत्र में पहनना शुभ समझा जाता है .
- कम से कम 5 कैरेट का शुद्ध माणिक्य सोने या तांबे की अंगूठी में जड़वाना चाहिए .
- इसे सूर्योदय से सुबह 9 बजे के बीच दाहिने हाथ की अनामिका (रिंग फिंगर) में धारण करना उचित माना जाता है .
- धारण करते समय ऊं घृणि: सूर्याय नम: मंत्र का 108 बार जप करना चाहिए .

मान्यता है कि विधि-विधान से माणिक्य धारण करने पर आत्मविश्वास बढ़ता है, ऊर्जा का संचार होता है और करियर में प्रगति के अवसर मिलते हैं .

इन तारीखों पर जन्मे लोग रखते हैं राज

अंक ज्योतिष के अनुसार जिन लोगों का मूलांक 1 होता है, वे भरोसेमंद, वफादार और दूसरों के राज को सुरक्षित रखने वाले माने जाते हैं. अंक ज्योतिष यानी न्यूमेरेलॉजी में जन्मतिथि का खास महत्व माना जाता है. कहा जाता है कि किसी व्यक्ति के जन्म की तारीख से उसके स्वभाव, व्यक्तित्व और जीवन से जुड़ी कई बातें जानी जा सकती हैं. अंक ज्योतिष के अनुसार हर व्यक्ति का एक मूलांक होता है, जो उसकी जन्मतिथि के अंकों को जोड़कर निकाला जाता है. अंक ज्योतिष के अनुसार जिन लोगों का जन्म किसी भी महीने की 1, 10, 19 या 28 तारीख को होता है, उनका मूलांक 1 माना जाता है. माना जाता है कि इस मूलांक वाले लोग स्वभाव से भरोसेमंद होते हैं और दूसरों के राज को सुरक्षित रखना अच्छी तरह जानते हैं. न्यूमेरेलॉजी के अनुसार मूलांक 1 वाले लोग अपने दोस्तों और करीबियों के लिए बेहद विश्वसनीय माने जाते हैं. यदि कोई व्यक्ति इन्हें अपना कोई निजी राज बताता है, तो ये उसे किसी तीसरे व्यक्ति से साझा नहीं करते. यही वजह है कि ऐसे लोग अक्सर अपने मित्रों और परिवार के बीच भरोसेमंद माने जाते हैं. अंक ज्योतिष के अनुसार मूलांक 1 का स्वामी ग्रह सूर्य माना जाता है. सूर्य के प्रभाव के कारण इस मूलांक के लोगों में नेतृत्व क्षमता काफी मजबूत होती है.